बाबा मुक्तानन्द के दर्शन एवं उनका प्रज्ञान

१. आपको ध्याओ।
आपका सम्मान करो।
आपको समझो।
आपका राम, आपमें आप होकर रहता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *ध्यान-सोपान,* पृ. ३७।
© २०१२ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह तस्वीर सिद्धयोग बुकस्टोर में उपलब्ध है।

२. सद्गुरुनाथ महाराज की जय! बड़े प्रेम व सम्मान से सबका हार्दिक स्वागत। सम्मान के साथ दूसरे व्यक्ति का स्वागत करना, सच्ची मानवता है। यह ज्ञान है। जब मनुष्य अपने अन्तर में परमात्मा के दर्शन करता है तो वह दूसरों में भी परमात्मा को देखने लगता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Gurudev Siddha Peeth Newsletter,* जुलाई १९७९, पृ. ७।
© १९७९ गुरुदेव सिद्धपीठ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

३. गुरु सदैव मन्त्ररूप में तुम्हारे हृदय में रहते हैं। उन्हें वहीं देखो—उनके साथ सम्पर्क बनाए रखने का वही सबसे अच्छा तरीक़ा है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* पृ. ६३।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

४. मेरे गुरुदेव कहा करते थे, "भगवान एक हैं और वे प्रेमस्वरूप हैं।" इसलिए, तुम्हें सीखना चाहिए कि अपने पूरे हृदय से दूसरों का स्वागत कैसे किया जाए। यही सर्वोच्च धर्म है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *गणेशपुरी निवासी भगवान नित्यानन्द,* पृ. १४९।
© २०१२ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

५. जब तुम्हारे अन्दर 'उसे' पाने की तीव्र ललक होती है, जब तुम्हारे अन्दर उस परम सत्य को पाने की प्यास होती है, तब तुम्हारे अपने हृदय में यह सत्य स्वयं को प्रकट करता है। ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ आत्मा नहीं है? ऐसा कौन है जिसमें यह आत्मा नहीं है?

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *I Have Become Alive,* पृ. ३३।
© १९९२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

६. जैसे-जैसे मन्त्र तुम्हारे अन्दर अधिकाधिक स्पन्दित होता जाता है, मन्त्र का लक्ष्य—जो शुद्ध प्रेम है—हृदय में प्रवाहित होने लगता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* पृ. १६६।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह तस्वीर सिद्धयोग बुकस्टोर में उपलब्ध है।

७. हम परमात्मा को पाने के लिए ध्यान नहीं करते वरन् उस परमात्मा के दर्शन के लिए ध्यान करते हैं जो पहले से ही प्राप्त है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *The Self is Already Attained,* पृ. १।
© १९९३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

८. साधना के लिए तुम्हें आवश्यकता है तो बस दृढ़ प्रयत्न की। और यदि तुम वह दृढ़ प्रयत्न करो तो तुम चाहे कहीं भी हो, तुम्हारी साधना भली प्रकार होगी। उसके लिए तुम्हें किसी आश्रम में रहने की आवश्यकता नहीं है। साधना के लिए तुममें आत्मसाक्षात्कार की प्रचण्ड तड़प होनी चाहिए और यदि तुममें वह है तो तुम कहीं भी साधना कर सकते हो।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *प्रशान्ति से स्पन्दित,* १२ जून।

© २०१४ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

९. हमारा अस्तित्व चिति में है और हम वापस इसी में लय हो जाते हैं। हम वह चिति हैं। इसी को साधना कहते हैं।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *प्रशान्ति से स्पन्दित,* २५ जून।

© २०१४ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१०. नामसंकीर्तन एक बहुत महान साधना है। यह रक्त को प्रभावित करता है और रक्त के माध्यम से शरीर की अन्य सभी धातुओं को प्रभावित करता है। महान सिद्धजन, आत्मसाक्षात्कार के बाद भी, आनन्दपूर्ण नामसंकीर्तन में रत रहते हैं। यदि तुम प्रेम से नामसंकीर्तन करो तो वह 'नाम' ही तुम्हें उसके अर्थ तक ले जाता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Shree Gurudev Ashram Newsletter,* जनवरी १९७४, पृ. १०।

© १९७४ श्रीगुरुदेव आश्रम®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

११. वह शक्ति जो तुम्हारे अन्दर जाग्रत होकर क्रियाशील हो जाती है, वही सच्ची गुरु है। ऐसा मत सोचो कि गुरु, शक्ति और मन्त्र एक-दूसरे से भिन्न हैं। वे एक ही हैं। दृढ़ता, स्थितप्रज्ञा और प्रेम के साथ ध्यान करो, यह भाव रखते हुए कि गुरु तुम्हारे अन्तर में वास करते हैं।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *American Tour* १९७०, पृ. ३२।

© १९७४ स्वामी मुक्तानन्द ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१२. इस योग में नामसंकीर्तन की महानतम भूमिका है; यह एक चुम्बक है जो परमात्मा की शक्ति को खींचता है। नामसंकीर्तन, ध्यान को आसान बनाता है। अन्तरस्थ कुण्डलिनी शक्ति, नामसंकीर्तन से बहुत प्रसन्न हो जाती है। यह जानने के लिए कि यह कितना प्रभावशाली है, तुम्हें नामसंकीर्तन करना चाहिए।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* पृ. १४४।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१३. आज प्रेम का दिन है, इसलिए मैं तुम सबका बड़े प्रेम से स्वागत करता हूँ, क्योंकि सबसे प्रेम करना ही मेरी पूजा है। मेरे पास पूजा का और कोई साधन नहीं है। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Shree Gurudev Ashram Newsletter,* अप्रैल १९७६, पृ. ५।
© १९७६ श्रीगुरुदेव आश्रम®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१४. जिसने अपने में जगत को और जगत में अपने को देखा और चराचर जगत में उस 'एक' को देखा; मुक्तानन्द! वही एक सिद्ध है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *मुक्तेश्वरी,* पृ. २८२।
© २०१४ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१५. यदि तुममें गुरु के प्रति पूर्ण भक्ति, आदर और प्रेम है, तो इसमें तनिक भी संशय नहीं है कि तुम्हें वह सब मिलेगा जो गुरु के पास देने के लिए है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Selected Essays,* पृ. ५१।
© १९९५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१६. गुरु करुणापूर्ण हैं; इसलिए, यदि तुम उनमें अपने को लय कर दो, तो तुम भी करुणा से भर उठोगे। प्रेम से, अपनेपन के भाव से, अपने आपको उनमें डूब जाने दो।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *गुरुतत्त्व-सार,* पृ. ३४।
© १९९९ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१७. तुम वह हो जिसे तुम ध्यान में देखते और अनुभव करते हो और जिसे यह बोध होता है कि ध्यान में तुम्हारे साथ क्या हो रहा है। जो सतत विद्यमान है, उसे ढूँढ़ने का प्रश्न ही कहाँ उठता है?

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Satsang with Baba,* भाग ५, पृ. १७९।
© १९७८ गुरुदेव सिद्धपीठ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१८. अन्तर-जगत महान है, वह विशाल है, वह दिव्य है—और ध्यान द्वारा उस जगत को जाना जाता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* पृ. २६।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

१९. अभिनवगुप्त के 'तन्त्रालोक' में स्पष्ट किया गया है कि सब कुछ शिव है। इस कारण, इस बोध के अभ्यास द्वारा समदृष्टि का उदय होना बड़ा स्वाभाविक है। वस्तुतः जब सब कुछ शिव है, तो हर चीज़ को शिव के रूप में देखना क्या इतना कठिन है? हमें अपने रीतिगत दृष्टिकोण को बदलना चाहिए। तब हम सुखी हो जाएँगे।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Secret of the Siddhas,* पृ. २०२।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२०. वेदान्त में एक प्रश्न है : "मनुष्य को वेदान्त की क्या आवश्यकता है? मनुष्य वेदान्त का उपयोग कैसे करे?" जो उत्तर दिया गया है, वह है : "मैं वेदान्त का अध्ययन करता हूँ जिससे कि मैं अपने सभी दुःखों और कष्टों से छुटकारा पा सकूँ और अपने अन्तर में सहज परमानन्द को पा सकूँ।" हम ज्ञानार्जन करते हैं जिससे कि हम अपने आपमें तृप्त हो सकें, जिससे कि हम मुक्त हो सकें और शान्ति का अनुभव कर सकें।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Shree Gurudev Ashram Newsletter,* सितम्बर १९७८, पृ. ९-१०।
© १९७८ गुरुदेव सिद्धपीठ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह तस्वीर सिद्धयोग बुकस्टोर में उपलब्ध है।

२१. मैं इस संसार को सन्तों से भरा हुआ देखना चाहता हूँ। मैं सबको सुखी देखना चाहता हूँ। हर कोई सतत आनन्द में रहे और उसे स्वप्न में भी दुःख न हो। परमात्मा से यही मेरी अन्तिम इच्छा है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *In the Company of a Siddha,* संशोधित आवृत्ति, पृ. ३६।
© १९८५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२२. जिस क्षण तुम्हें अपने अन्तर में परमात्मा का बोध होता है, तुम इस पूरे संसार को स्वर्ग-समान देखने लगते हो।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* पृ. ४७१।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२३. गुरुकृपा को शक्तिपात के रूप में भी जाना जाता है जिसे केवल सिद्धगुरु ही सम्प्रेषित कर सकते हैं। उनमें भक्त को दिव्यता का अनुभव प्रदान करने की सामर्थ्य होती है। यह सर्वथा सत्य है कि जब तक पूर्णरूप से सामर्थ्यवान गुरु की कृपा द्वारा शक्तिपात प्राप्त नहीं होता, तब तक व्यक्ति को पूर्ण अन्तर-समाधान मिलना सम्भव नहीं।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Bhagawan Nityananda: His Life and Mission,* द्वितीय आवृत्ति, पृ. ५५।
© १९७४ गुरुदेव सिद्धपीठ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२४. गुरु के देने से लेना, गुरु के लेने से देना, गुरु का ही होकर रहना, मुक्तानन्द! ये गुरुभक्ति के लक्षण हैं।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *मुक्तेश्वरी,* पृ. १९२।
© २०१४ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२५. यह सर्वथा निश्चित है कि आत्मा आनन्दपूर्ण है . . . एक बार अन्तर्मुखी होकर उस आनन्द को प्राप्त करने पर, व्यक्ति जब फिर से बहिर्मुखी होता है तो वह सभी में उसी आनन्द को महसूस करता है। जब वह लोगों को इस बोध के साथ देखता है कि वे भी आनन्द से भरे हैं, तो वह समाधि-सुख को प्राप्त करता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* पृ. ५२९।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२६. कितना दिल में खुश हूँ मैं। कितना हँसता, नाचता, कूदता, परा-मस्ती में पूर्ण मस्त रहता हूँ। मुक्तानन्द! जब हृदय में नित्यानन्द प्रकट हुआ तो ऐसी गति पाई।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *मुक्तेश्वरी,* पृ. ३००।
© २०१४ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२७. तुम्हें अपने मन को "शिवोऽहम्," "मैं शिव हूँ" और "सोऽहम्," "मैं 'वह' हूँ," के भाव में लीन रखना चाहिए। तुम्हारी यह समझ होनी चाहिए, "यह परमात्मा है जो ध्यान कर रहा है। मेरे ध्यान के सभी तत्त्व परमात्मा हैं। मेरा ध्यान स्वयं परमात्मा है।" यह बोध होने पर तुम कहीं भी, कभी भी, अपनी साधना कर सकते हो।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *सत्य की ओर,* पृ. १३५।
© २००९ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२८. शैवदर्शन के अनुसार, जब साधक कुण्डलिनी शक्ति के बल को प्राप्त कर लेता है तब वह असीमित रूप से विस्तृत होकर सम्पूर्ण विश्व को अपने भीतर आत्मसात् कर लेता है; वह सम्पूर्ण विश्व को अपनी आत्मा में देख पाता है। . . .वह शिव के साथ एकरूप होकर शिव ही बन जाता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *कुण्डलिनी : जीवन का रहस्य,* पृ. ८।
© २०१२ चित्शक्ति पब्लिकेशन्स®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

२९. सिद्ध वह है जो मुक्तियोग के अभ्यास द्वारा परम मुक्ति की स्थिति में पहुँचकर, सदा के लिए उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Satsang with Baba,* भाग ३, पृ. १९५।
© १९७७ श्रीगुरुदेव आश्रम®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

३०. गुरुसेवा अनमोल है। यह अमूल्य है। तुम अन्य किसी भी चीज़ का मूल्य निर्धारित कर सकते हो, पर तुम गुरुसेवा का मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते। गुरुसेवा करने के बाद ही, गुरु को सेवा अर्पित करने के बाद ही, तुम्हें इसका बोध व इसकी प्राप्ति होती है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* पृ. २०५।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

३१. अपनी दृष्टि को बदलो। ध्यान में अधिकाधिक गहरे उतरते हुए वहाँ पहुँचो जहाँ असाधारण परमानन्द की स्थिति तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। जब तुम उस स्थिति तक पहुँचोगे, तब तुम वही बन जाओगे। तुम यह जान जाओगे, "मैं 'वह' हूँ," "सोऽहम्।"

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *Everything Happens for the Best*, पृ. ३१।
© १९९४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।